हिन्दुस्तान
www.livehindustan.com सोमवार, 9 अगस्त 2010 नई दिल्ली, नगर, श्रावण, कृष्ण पक्ष चतुर्दशी, विक्रम संवत 2067, वर्ष 75, अंक 188, 18 पेज,

अब पुदीने का पेटेंट

बौद्धिक संपदा के इस युग में हमें अपनी विविधतापूर्ण विरासत के प्रति सजग रहना होगा, वरना पता नहीं कौन इन्हें अपने नाम पेटेंट करवा ले।

चीन की एक कंपनी ने फ्लू के इलाज में पुदीना और कालमेघ के इस्तेमाल के लिए पेटेंट की अर्जी यूरोपीय पेटेंट दफ्तर में दाखिल की और इस साल उसे स्वीकार भी कर लिया जाता लेकिन भारत ने ऐसे सबूत दिए जिनसे पता चलता है कि ये औषधियां आयुर्वेद और यूनानी पद्धतियों में शताब्दियों से इस्तेमाल होती हैं। सौभाग्य से चीनी कंपनी की अर्जी को नामंजूर कर दिया गया। पुदीने से तो हम सभी परिचित हैं और कालमेघ का नाम भी काफी लोगों ने सुना होगा। यह एक पौधा होता है जिसका हर हिस्सा बेहद कड़वा होता है। इसे परंपरागत रूप से मलेरिया, टाइफाइड, फ्लू वगैरा तमाम बुखारों में, लीवर की समस्याओं में यहां तक कि सांप के काटे के इलाज में भी उपयोगी माना जाता है। इसमें पाए जाने वाले एक रसायन को एचआईवी वायरस के खिलाफ भी कारगर पाया गया है। बंगाल जैसे दलदली प्रांतों में जहाँ मलेरिया का जोर काफी रहता है, कालमेघ काफी जाना-पहचाना पौधा है। पिछले वर्षों में परंपरागत भारतीय दवाओं की ओर कई विदेशी कंपनियों की नजर रही है। इसकी वजह यह है कि हमारी परंपरागत आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी आदि प्रणालियों में काफी विस्तार से दवाओं के गुणों के बारे में लिखा गया है। आधुनिक कंपनियों की दिलचस्पी इन दवाओं का रासायनिक विश्लेषण करके उनमें से ऐसे रसायन अलग करने की है, जिन्हें वैज्ञानिक ढंग से प्रमाणित करके आधुनिक दवाओं की तरह बेचा जा सके। इसके पहले भी कई औषधियों को पेटेंट करने की कोशिश हुई है। हल्दी और नीम तो एक बार पेटेंट हो गए थे जो फिर वापस छीन कर लाने पड़े हैं। अब भारत सरकार भी जागी है और उसने हमारी परंपरागत धरोहर का एक व्यवस्थित रिकार्ड बनाने का काम शुरू कर दिया है। इसी की बदौलत पुदीना और कालमेघ चीनी पेटेंट बनते-बनते बचे हैं।

मामला सिर्फ दवाइयों का नहीं है, तमाम परंपरागत चीजें अब बाजार की नजर में हैं। बासमती चावल को लेकर भी भारत को लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी है, क्योंकि इसका अरबों डॉलर का अंतरराष्ट्रीय बाजार है। आजकल क्या-क्या पेटेंट हो जाए पता नहीं चलता। कई विदेशी कंपनियों ने योग में कुछ छौंक लगाकर पेटेंट करने का कारोबार चलाया है, इसलिए भारत सरकार योगासनों को कायदे से दर्ज करके उन्हें पेटेंट करवाने की कोशिश में है। भारत इसलिए भी निशाने पर है क्योंकि अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक सामाजिक विविधता की वजह से इसकी स्थिति अद्वितीय है। कहा यह जाता है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा 'जीन बैंक' है। भारत में सिर्फ चावल की ही बीस हजार से ज्यादा प्रजातियां हैं, जितनी शायद बाकी दुनिया में न हों। भारत में हर जिले में आम की एक-दो नई किस्में मिल जाएंगी। यह विविधता नई-नई खोजों के लिए भी फायदेमंद है और परंपरागत किस्मों के बाजार में दूसरे देश भी अपना हिस्सा चाहते हैं। विदेशी इस 'जीन बैंक' के फायदे उठाने के लिए आतुर हैं, और यह भी सही है कि हम इसके प्रति लापरवाह हैं और कई दुर्लभ प्रजातियों को नष्ट होने दे रहे हैं। हमारी यह ताकत विविधता की विरासत है, हमें इसके प्रति सचेत होना होगा और इसे बचाना होगा। इस बाजार में समझदारी से नहीं रहे तो यह हमें लूट सकता है, इसके लिए आंख-कान खुले रखना जरूरी है।